श्री राम चालीसा (हिन्दी)

|| दोहा ||

!! गणपति चरण सरोज गहि । चरणोदक धरि भाल,
लिखौं विमल रामावली । सुमिरि अंजनीलाल,
राम चरित वर्णन करौं । रामहिं हृदय मनाई,
मदन कदन रत राखि सिर । मन कहँ ताप मिटाई !!

|| चौपाई ||

!! राम रमापति रघुपति जै जै । महा लोकपति जगपति जै जै,
राजित जनक दुलारी जै जै । महिनन्दिनी प्रभु प्यारी जै जै,
रातिहुं दिवस राम धुन जाहीं । मगन रहत मन तन दुख नाहीं,
राम सनेह जासु उर होई । महा भाग्यशाली नर सोई !!

!! राक्षस दल संहारी जै जै । महा पतित तनु तारी जै जै,
राम नाम जो निशदिन गावत । मन वांछित फल निश्चय पावत,
रामयुधसर जेहिं कर साजत । मन मनोज लखि कोटिहुं लाजत,
राखहु लाज हमारी जै जै । महिमा अगम तुम्हारी जै जै !!

!! राजीव नयन मुनिन मन मोहै । मुकुट मनोहर सिर पर सोहै,
राजित मृदुल गात शुचि आनन । मकराकृत कुण्डल दुहुँ कानन,
रामचन्द्र सर्वोत्तम जै जै । मर्यादा पुरुषोत्तम जै जै,
राम नाम गुण अगन अनन्ता । मनन करत शारद श्रुति सन्ता !!

!! राति दिवस ध्यावहु मन रामा । मन रंजन भंजन भव दामा,
राज भवन संग में नहीं जैहें । मन के ही मन में रहि जैहें,
रामहिं नाम अन्त सुख दैहें । मन गढ़न्त गप काम न ऐहें,
राम कहानी रामहिं सुनिहें । महिमा राम तबै मन गुनिहें !!

!! रामहि महँ जो नित चित राखिहें । मधुकर सरिस मधुर रस चाखिहें,
राग रंग कहुँ कीर्तन ठानिहें । मम्ता त्यागि एक रस जानिहें,
.राम कृपा तिन्हीं पर होईहें । मन वांछित फल अभिमत पैहें,
राक्षस दमन कियो जो क्षण में । महा बह्नि बनि विचर्यो वन में !!

!! रावणादि हति गति दै दिन्हों । महिरावणहिं सियहित वध कीन्हों,
राम बाण सुत सुरसरिधारा । महापातकिहुँ गति दै डारा,
राम रमित जग अमित अनन्ता । महिमा कहि न सकहिं श्रुति सन्ता,
राम नाम जोई देत भुलाई । महा निशा सोइ लेत बुलाई !!

Download more Chalisa in Hindi and English at www.Pandit.com

!! राम बिना उर होत अंधेरा । मन सोही दुख सहत घनेरा,
रामहि आदि अनादि कहावत । महाव्रती शंकर गुण गावत,
राम नाम लोहि ब्रह्म अपारा । महिकर भार शेष सिर धारा,
राखि राम हिय शम्भु सुजाना । महा घोर विष किन्ह्यो पाना !!

!! रामहि महि लखि लेख महेशु । महा पूज्य करि दियो गणेशु,
राम रमित रस घटित भक्ति घट । मन के भजतहिं खुलत प्रेम पट,
राजित राम जिनहिं उर अन्तर । महावीर सम भक्त निरन्तर,
रामहि लेवत एक सहारा । महासिन्धु कपि कीन्हेसि पारा !!

!! राम नाम रसना रस शोभा । मर्दन काम क्रोध मद लोभा,
राम चरित भजि भयो सुज्ञाता । महादेव मुक्ति के दाता,
रामहि जपत मिटत भव शूला । राममंत्र यह मंगलमूला,
राम नाम जपि जो न सुधारा । मन पिशाच सो निपट गंवारा !!

!! राम की महिमा कहँ लग गाऊँ । मति मलिन मन पार न पाऊँ,
रामावली उस लिखि चालीसा । मति अनुसार ध्यान गौरीसा,
रामहि सुन्दर रचि रस पागा । मठ दुर्वासा निकट प्रयागा,
रामभक्त यहि जो नित ध्यावहिं । मनवांछित फल निश्चय पावहिं !!

|| दोहा ||

!! राम नाम नित भजहु मन । रातिहुँ दिन चित लाई,
मम्ता मत्सर मलिनता । मनस्ताप मिटि जाई,
राम का तिथि बुध रोहिणी । रामावली किया भास,
मान सहस्त्र भजु दृग समेत । मगसर सुन्दरदास !!

Pandit.com